International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 01-07-2020; Accepted: 15-07-2020; Published: 02-08-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 84-87

भारतीय नारी का महा- आख्यान: शिवमूर्ति

रिंकी कुमारी

पीएच-डी. हिंदी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, त्रिपुरा, अगरतला, त्रिपुरा, भारत

प्रस्तावना

समाज में घटित विभिन्न घटनाओं के कारण नारी आंदोलन से एक निश्चित उदेश्य प्राप्त हुआ । उसमें तत्कालीन साहित्यकारों की भूमिका महत्वपूर्ण रही । साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री को उनके अधिकारों से परिचित करवाया, इसमें सबसे पहला एंव महत्वपूर्ण नाम 'सिमोन द बोउआर' का है जिसने अपनी पुस्तक 'द सेकेंड सेक्स' स्त्री संबधित कई महत्वपूर्ण विचारों को व्यक्त करती हुई दिखाई देती है,जिसमें उन्होने प्रमुखता से स्त्रियों की समस्याओं को उठाया है। जैसे औरत गुलाम क्यों है ? औरत की नीति क्या है ? वे शिक्षा के अधिकार से वंचित होकर लिंग भेद की शिकार हो गयी । 19वीं सदी में जो सुधार आंदोलन शुरू हुये, उनमें स्त्रियों की दशा को सुधारने की कोशिश की गई। किंतु पुरुषों के संदर्भ में स्त्री समानता की बात नहीं की गयी। जब हम सामाजिक स्तर के बदलाव को रेखांकित करने की बात करते हैं तो सबसे पहले हमें समस्याओं के रेखांकन पर कार्य करना होता है। यही कारण है कि शिवमूर्ति की उपन्यासों एंव कहानीयों में हमें सामाजिक समस्याओं का रेखांकन विस्तार रूप में देखने को मिलता है। शिवमूर्ति के कथा-साहित्य जाति, धर्म से संबंधित समस्याओं के रेखांकन के साथ-साथ स्त्री विमर्श की समस्याओं को भी रेखांकित करता है। उनका स्त्री विमर्श समाज की उन निम्नवर्गीय औरतों के शारीरिक व आत्मीय सौन्दर्य, दैहिक ताप व उत्पीड़न जिजीविषा, प्रतिरोध, राग द्वेष पारिवारिक क्लेश आदि पर केंद्रित है, जो सामाजिक, धार्मिक,राजनीतिक आर्थिक स्तर पर पुरुष वर्ग के कुंठाओं का शिकार होती रहती है। घर ,गाँव , समाज के सीमाओं में कैद होकर अपना जीवन गुजार रही है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। समाज में जो घटनाएँ घटित होती हैं उसका जीवंत चित्रण साहित्य में किया जाता है, इस बात को हम शिवमूर्ति के कथा-साहित्य के संदर्भ में देख सकते हैं। शिवमूर्ति को एक आंचलिक कथाकार के तौर पर जाना जाता है किन्तु वे इससे आगे बढ़कर हमारे सामने प्रस्तुत होते हैं। वे एक संवेदनशील लेखक हैं जो वर्तमान की सीमाएँ लांघते हुए भविष्य तक पहुँच जाते हैं। उनके नब्बे के दशक में लिखे हुए कथा साहित्य में हम उन प्रश्नों को देख सकते हैं जो आज के समाज की मुख्य समस्या बन कर उभर रहे हैं। समकालीन कथा-साहित्य में शिवमूर्ति ग्रामीण परिवेश को जिस तरह से परस्तुत किए है उसे देखकर ऐसा लगता है कि सभी घटनाएँ आंखो के सामने घाटी हो रही है । शिवमूर्ति कैसे जाती, धर्म, यौन सुचिता, चरित्र आदि पुरुषों के वर्चस्व को कायम रखने के लिए झूठी शान, इज्जत के बोझ तले दबे हुए भरपूर ग्रामीण स्त्रियों की मनोदशा को पाठकों के सामने पेश करते हैं। अपने अधिकार और अपनी अस्मत के प्रति सजग हुई निम्नवर्गीय स्त्रियाँ कैसे समाज के सामने सशक्त होती दिखाई देती है।

यह सब हम शिवमूर्ति की कहानी और उपन्यासों में प्रमुखता से देख सकते है। शिवमूर्ति का सम्पूर्ण कथा साहित्य दलित,किसान, स्त्री एंव निम्नवर्ग की आवाज़ बन कर उपस्थित होता है जिनमें मुख्य तौर पर स्त्री जीवन को स्थान मिला है, फिर चाहे वह 'त्रिशुल', 'तर्पण' तथा 'आखिरी छलांग' उपन्यास हों या फिर 'केसर कस्तूरी' तथा 'कुच्ची का कानून' कहानी संग्रह हों। वे अपने कथा- साहित्य में पुरुष की शोषण नीति उनकी भोगवादी प्रवृति पूरे समाज के सामने उभरकर आती है। उनके कथा- साहित्य में पात्रों का चरित्र-चित्रण हमेशा जीवंत लगता है। इनमें अनपढ़, गरीब, विस्थापित बाल ब्याहता, श्रमिक शोषित व उपेक्षित वर्ग की साधारण स्त्रियों का जिंदगीनामा है। जिसमें न हार की फिक्र है, न जीत की खुशी, बस संघर्ष ही संघर्ष है, वेदना ही वेदना है। शिवमूर्ति की कहानी 'कसाई बाड़ा' हो या 'तिरिया चरित्तर से

लेकर 'आखिरी छलांग तक का जो परिदृश्य है वह समकालीन पुरुष समाज वर्ग का यथार्थ रूप है। परिवार, थाना, कोर्ट, कचहरी, स्त्री, दलित, किसान, धर्म, संप्रदायिकाता, खेती, नौकरी सबसे जो एक समग्र चित्र निर्मित होता है, वह असुंदर और दागदार है। सभी जगह इन्सान रूपी खाल में भेड़िये छुपे हुए नजर आते है चाहे वह घर–परिवार हो या गाँव-समाज इसका वास्तविक चित्रण शिवमूर्ति के उपन्यास एंव कहानियों में देखने को मिलता है। शिवमूर्ति की कहानी का पात्र बहुत ही संघर्षवादी होते है। वह न्याय के लिए आखरी साँस तक लड़ते है। 'तर्पण' उपन्यास में सदियों से पोषित हिन्दू समाज की वर्णाश्रम-व्यवस्था से जुड़ी मानसिकता के विरोधी स्वरों के तानों-बानों से पूरा औपन्यासिक ढाँचा खड़ा किया गया है। यहाँ बड़ी संजीदगी से इस बात को रखा गया है कि कानून द्वारा पोषित 'हरिजन एक्ट' केवल दलित अस्मिता को ही संबल प्रदान नहीं करता, बल्कि यह नए सिरे से ग्रामीण जीवन- समाज में स्वर्ण-दलित की गोलबंदी को तीव्र करता है। स्वर्ण द्वारा दलित स्त्री के बलात्कार की घटना जहाँ एक तरफ सदियों पुरानी ग्रामीण समाज- व्यवस्था की तस्वीर रखती है, वहीं रजपत्तीया के बलात्कार का विरोध करती ग्रामीण दलित स्त्रियों की छवि ग्रामीण जीवन के बदले समाज को रेखांकित करती है। तर्पण उपन्यास दलित- शोषित वर्गों कि उस मनोदशा को दर्शाती है ,जो सदियों से वेलोग इस अत्याचार, दुर्व्यवहार का शिकार हुए है । इस उपन्यास में रजपतिया, भाईजी , धरमु पंडित, पंडिताइन, पियारे, आदि जैसे निम्नलिखित पात्रों के चरित्र के साथ-साथ अवध का एक गाँव अपने भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक स्थितियों को अपने में समाया हुआ हैं । रजपतिया के पिता पियारे पंडिताइन के जबाब में कहता है "किसी गुमान में मत भूलिए। पंडिताइन। अब हम ऊ चमार नहीं हैं कि कान, पूँछ दबाकर सब सह, सुन लेंगे। चिउँटे को गुड़ का मजा लेना महँगा कर देंगे।"[1] । इसे साफ पता लगाया जाता है कि अब दलितों को भी राजनीति का सत्ता केंद्र तक पंहुचना, शिक्षा के प्रति जागरूक होना एंव कानून कि जानकारी होना रजपतिया के साथ छेड़-छाड़ के मामलो को बलात्कार के केश बनवाकर दलित एक्ट के तहत चंदर को फसाना यह साबित करता है कि दलित भी अब जागरूक हो गए है तथा अपने अधिकार के लिए सारे दाव-पेच लगा सकते है।

शिवमूर्ति का दूसरा उपन्यास 'त्रिशूल' के माध्यम से शिवमूर्ति ने समाज के राजनीति पर प्रहार किया है । कैसे अपने फायदे के लिए मंडल-कमंडल कार्ड खेला जाता है । हमारे ही देश के नेताओं द्वारा भोली-भाली जनता कैसे आपस में लड़ते रहते हैं ? त्रिशूल उपन्यास में सांप्रदायिकता और जातिवाद की आड़ में घृणित राजनीति करने वाली मानसिकता साफ दिखाई देता है। त्रिशूल उपन्यास के शुरुआत में ही इन निम्न पंक्तियों से समकालीन समाज का चेहरा साफ होने लगता है। "कहा से शूरु करू महमूद की कहानी ? वहाँ से जब पुलिस उसे घसीट कर ले जा रही थी ..... या जब इसी चौराहे पर वे लोग उसके छाती पर त्रिशूल अड़ाकर मजबूर कर रहे थे , "बोल साले जै सिरी राम ....." [2]आज समाज में धर्म, जाति और संप्रदाय के ठेकेदार किस प्रकार नफरत फैलाने का कार्य कर रहे है। महमूद जैसे गरीब इंसान के लिए एक ही धर्म होता है वह है अपनी अस्तित्व को जिंदा रखने का धर्म | इस प्रकार देखा जाय तो शिवमूर्ति का उपन्यास समाज के संकट – जातिवाद, सांप्रदायिकतावाद और क्षुद्रगत राजनीति – का ही आख्यान रचता है। शिवमूर्ति की कहानी 'कसाईबड़ा' की स्त्री पात्र शनिचरी की बेटी को गाँव के प्रधान द्वारा सामूहिक विवाह के नाम पर देह व्यापार जैसे नर्क में धकेल दिया जाता है। जब सनीचरी को पता चलता है कि उसकी बेटी के साथ-साथ गाँव के सभी लड़कियों को शहर में ले जाकर बेच दिया गया है तो वह गाँव के प्रधान के खिलाफ धरने पर बैठ जाती है। जब तक मेरी बिटिया वापस नहीं लाओगे तब तक तुम्हारे दरवाजे पर धरना दूँगी। लेकिन क्या उस गाँव के अमीर एंव धोखेबाजों के सामने शनीचरी का धरना सफल हो पाता है? वह थानेदार के पास जाती है वहां भी उसे जलालत ही मिलती है। जिस समाज में प्रधान जैसा लालची नेता, थानेदार जैसे भ्रष्ट प्रशासनिक लोग राजनीति और कानून व्यवस्था में बने हुए हैं तब तक सनिचरी जैसी लाचार, बेबस स्त्रिओं को इंसाफ मिलने की क्या उम्मीद किया जा सकता है? आखिर में वही होता है जो समाज में शोषित वर्गों के साथ होता आया है। गाँव का लीडर चनिचरी से एक स्टाम्प पेपर पर अगुठा लगवाता है, सनीचरी चोरबती की रोशनी में कागजों को देखती है, "ई तौ कचहरी वाला कागद है बेटवा, ऊपर की ओर रुपैया जैसी छाप बनी है।"[3] लीडर कहता है की मुख्यमंत्री के पास तुम्हारी फरियाद लिखकर भेज रहे हैं तो वहां सादा कागज नहीं जाता है। सनिचरी उस पर दस्तखत कर देती है। अंत में उसे दूध में जहर मिलाकर पिला दिया जाता है, धरना स्थल पर ही सनिचारी अपना प्राण त्याग देती है। सनिचरी का सब जमीन लीडर का हो है। हमारे समाज में न्याय दिलाने वाला प्रशासन और समाज का विकास के लिए

मंचों पर बड़ी-बड़ी बातें करने वाले भ्रष्ट नेताओं के कारण न जाने रोज कितनी सनिचरी बेमौत मारी जाती हैं। यही समकालीन समाज की सचाई है जो हमें कथाकार शिवमूर्ति की उपन्यास एंव कहानियों के माध्यम से दिखाई देता है।

शिवमूर्ति की दूसरी कहानी 'तिरिया चरित्तर' कहानी की स्त्री पात्र 'विमली' पर उसके ससुर की कुदृष्टि, दुराचार करने के बाद विमली पर ही दोषारोपण और पंचायत का फैसला टिकुली लगाने की जगह पर गरम कलछुल से दागा जाएगा और फिर छन्न कलछुल खाल से छूते ही विमली का चीत्कार कलेजा फाड़ देता है। विधिवत शुरू हुए स्त्री विमर्श से बहुत पहले उनकी कहानियां हस्तक्षेप करती हैं। शिवमूर्ती की यह कहानी उन तमाम परतों को खोलती है जिनमें स्त्री के लिए परिस्थितियाँ, मान्यताएं दिखाई देती है । विमली उन तमाम मूल्यों को अंत तक ढोती है जिनमें स्त्री के चरित्र और उसकी यौन शुचिता की मांग करने वाला समाज संतुष्ट हो सके लेकिन ऐसा होता नहीं है अंतत: उसे तिरिया-चरित्तर की उस परिभाषा में जड़ दिया जाता है जिसमें पुरुष के तमाम दोषों को समेटकर स्त्री के पक्ष को नकारात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसी तरह तीसरी कहानी 'कुच्ची का कानून' में भी गाँव की एक निम्नवर्गीय विधवा स्त्री की स्थिति को दर्शाया है, जो पति के मरने के बाद जेठ की नजर उसकी संपत्ति पर टिक जाती है। पुरुष होने के नाते वह उस संपत्ति पर अपना दावा करने लगता है, क्योंकि भारतीय समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था के अनुसार स्त्रियों का संपत्ति पर कोई अधिकार नहीं होता है। शिवमूर्ति गाँव जैसे सामंती माहौल में कुच्ची जैसी सशक्त स्त्री पात्र को खड़ा करते हैं जो अपने लिए खुद कानून गढ़ती है। वह भरी पंचायत में यह घोषणा करती है कि उसके गर्भ में गैर-पुरुष का बच्चा पल रहा है। "कुच्ची ऐ आजी ! कुच्ची खड़ी होती है –कुंती माई डर गई, अंजनी माई डर गई, सीता माई डर गई, लेकिन बालकिसन की माई डरने वाली नहीं है । मेरा बालकिसन पैदा होकर रहेगा । "[4] ऐसा साहस भारतीय ग्राम व्यवस्था में जीने वाली स्त्रियों में नहीं देखा जा सकता है किन्तु कुच्ची जैसी पात्र के द्वारा शिवमूर्ति इस मान्यता को तोड़ते हैं । गाँव की स्त्री केवल अबला होती है। कुच्ची 'तिरियाचरित्तर' विमली की तरह ही स्वाभिमानी है, लेकिन इस बार वह विमली की तरह पंचायत के खूनी वार का शिकार नहीं होती। गाँव, समाज के सारे नियम-कानून को ताख पर रख कर कुच्ची अपने कोख पर अपना अधिकार मानते हुए बच्चे को जन्म देने के लिए पंचायत में बहुत ही सशक्त तरीके से लड़ती है। यह साबित करती है कि स्त्री का शरीर या उसकी कोख में पल रहे बच्चे पर पुरुष से ज्यादा अधिकार महिला का होता है। हमारे समाज में यह एक बहुत बड़ा त्रासदी है कि पुरुष को अपने शरीर पर अधिकार होने के साथ-साथ पत्नी के शरीर पर भी पूरा अधिकार मिला हुआ है। स्त्रियॉं को अपने स्वयं के शरीर पर भी अपना पूर्ण अधिकार नहीं है। शिवमूर्ति की कहानी 'कुच्ची का कानून' से यह मान्यता टूटती है। वह स्थापित करती हैं कि स्त्रीयों को अपने शरीर पर उतना ही अधिकार है जितना की पुरुषों को अपने शरीर पर माना जाता है। यह कहानी स्त्री विमर्श का एक नया रूप समाज के सामने उभरकर आता है। कोख पर अधिकार की मांग पूर्व में भी उठती रही हैं किन्तु भारतीय ग्रामीण सामंती व्यवस्था के संदर्भ में इन प्रश्नों को कभी नहीं उठाया गया।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि शिवमूर्ति का कथा- साहित्य स्त्रियों के लिए एक ऐसी व्यवस्था की मांग करता है जिसमें स्त्री हर स्तर से स्वतंत्र हो सके । इस मांग तक पहुँचने के लिए शिवमूर्ति भारतीय सामंती तथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था को परत-दर-परत खोलते चले जाते हैं। वह एक ऐसे नग्न यथार्थ को प्रस्तुत करते हैं जिसमें स्त्री न तो घर के बाहर सुरक्षित है और न ही घर के भीतर । जैसे भारतीय समाज में हमेशा से स्त्री को ही अग्नि परीक्षा देना पड़ता है। चाहे वह 'रामायण' की सीता का काल हो या 'तिरिया चरितर' की विमली हमेशा कटघरे में स्त्री को ही खड़ा किया जाता है। कुल मिलाकर भारतीय नारी की पीड़ा का एक महा-आख्यान रच दिया जाता है। सीता का चरित्र भारतीय नारी की पीड़ा का कारुणिक और मार्मिक दस्तावेज है जो पृथ्वी से निकलता है और पृथ्वी में ही समा जाता है। हमारे समाज में स्त्री और चरित्र को लेकर जो मान्यताएँ पहले से विधमान हैं क्या वह वाजिब है या गैर-वाजिब ? जैसा कि संरचनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट है कि हमारा समाज पुरुष-प्रधान समाज हैं, जहाँ स्त्रियों की स्वतंत्रता हमेशा से किसी न किसी रूप में बाधित रही है। वह उन तमाम मूल्यों को अंत तक ढोती है जिनमें स्त्री के चरित्र और उसकी यौन शुचिता की मांग करने वाला समाज संतुष्ट हो सके लेकिन ऐसा होता नहीं है अंतत: उसे तिरिया-चरित्तर की उस परिभाषा में जड़ दिया जाता है जिसमें पुरुष के तमाम दोषों को समेटकर स्त्री के पक्ष को नकारात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

संदर्भ सूची